

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय

ननाक २ स्नानमार्गसदापातुं केलीक कनमाज्जगता ॥
॥ नमामि शीवर्कसत्त्व कनमपुं शीमलनी २
सकगुत्रवन्न (धप्रसादः दहि तत्त्व अनुलाव ॥ ८०० ॥
नागनाट ॥ नमामि शक्तिनधम्मका तु प्ययह शी
हवन अनुल वधम्मका तुवागी श्वत्रं ॥ क ॥
नमामि शक्तिनपंकजिननमास्तु २ दशरुमि द्वागी स

40

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

प्रसादिनः रुलिं गल उयका-काशा ॥ अहिनि सं स
 कयुवुवा न न-कुवा गल मुदिग्ध वरा व अराव्य २ ऊल म
 मवलेर यव न्ध न मुदिग्ध लर य मा वृ ऊरि-य-य सीरा
 या ॥ ॐ ॥ मागलालिका ॥ मुरु व-कथ मा वं काल म
 व वल वृ प वि विरु कल सं २ उ अ १ ६ काल व र्जा मृ क म
 इ क-स क सं ल धि क सना मृ स यी ॥ ॐ ॥ चंडा मृ गल स

७५

वाधिरुल शय कं सर्व कि न व्या पित-महज कल सं २ ऊ
 क मल-स्वध क ह न्प क वृ ना रु व सं सा व ना स न-वि व क
 वृ यी ॥ वरु प ल सा न् म य गं धा वृ स मृ क सं ख ग म धि
 क-पं च पि यूर सं २ ह काल म नु पु ष्य अ ध-व र्ज सं ल पि क
 वि पा क क ल सं ॥ घ क म र्प क न क फ वृ प रा व आ क
 क म नु कि नि ऊ ल वृ प २ म कि नि सा धा व न-इ व ना च क

७२

ज्ञानसत्त्वमानियः रुद्रिजकलसः ॥ पाशादिआचम
 नदानपुंन्यसवं समयसत्त्वप्रव्यसितविसलकलसं
 २ महाबागडव्यरुयः बाधिविरुवृपः समयसत्त्वः ॥
 नमस्त्वेतुकिरुतः ॥ ॐ ॥ बागतीटः ॥ नकवृननजी
 ती वायनगुनुः लिज्जी द्वाद्गउऊप्रहलनहकिन
 नः ॥ कः ॥ उमदेवी वावुनी महामामकिदेवी २ ऊगन

२ नकवृननजी

प्रभादिनमयनहसुबागधः ॥ आगमव्यदपूवा
 नवर्षानि २ यागधलमदि कां गुवृउ पदगधः ॥
 पकवृद्वस्व नवृपदकः २ मया जकागीनी मा महवृज
 वृकह वृजः ॥ ॥ सकगुवृवलनसिबगरुधजीया २ रुध
 योती वार्कवर्जस्व नगवृपी ॥ ॐ ॥ बागरीलवी ॥ नमः
 हं कायुनवृपधनू २ स्वद्विविसलउद्राधनू ॥ कः ॥ नना

२ नकवृननजी

931

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

179

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सदादिनिदयः सहजा भानन्द सवतिधवाश्चत्तमामिः
 श्रीचक्रसप्तः सतयुवचक्रधाराधिका ॥ ३३ ॥
 १ भाग्यभूतः पुत्रादादा आर्यः ॥ ३३ ॥
 श्रीकृष्णविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ३३ ॥
 कर्मादयस्त्वयि ॥ ३३ ॥
 दशैश्वर्यकायः ॥ ३३ ॥

भाद्रपदा मासः ॥ सा विंशत्यने शतं सहस्रयनः कथं न
 कथं चिह्नं वाचाः गगनं नीचावर्तः दक्षिणं ऊर्ध्वं भवमातु
 जलवर्षा नाः ॥ अथ च खट्वः शृङ्गिण्यान्मममनः पयः
 सायिरुक्ता वाः समविवाहिनीः वर्जवावाहिः उक्तावनद्वद
 मिर्जधाः नाः ॥ अथ अग्निः नीचावर्तः कलिमातुलः समयु
 वृद्धवनः आनाथः समयाजानन्तः कलिमातुलः समयु

२०१॥

नवर्जवागहि ॥ ३ ॥ नागकर्षि ॥ धीर्दशनामयी
आगिनीदहकवा नीरकमलकवीरघं धृक्न हविषान
॥ क ॥ आगिनीदुष्प्रविपुलनहनजिआयीश्वावासुहर्ष
विशालकमलमदिवयी ॥ उपद्रुथागिनीनपनका
यीरमलिकुनवहियानादिशानसमान ॥ सासुह
नघानकवीरानरुच्युर्गइथिपकनरुगडा ॥ ४ ॥

30

34

२ वरुआ जिनी ॥

32

वर्जक वांछ कहा थ्य विध विन्या-कचिभजी याउ वदांज २
संयुट योगिनी के सन विहा गुंगन-महासूर्य म बी प्रसाद
॥ ॥ वरु वा नाहि आ लि र्जं स सवन-ना वस्यि वृह विविह
नरंग २ वा धुनी क नं यी यक्ति-दुनि ह वृश-श्रु वृशु न न
ल न प्रसाद ॥ ॥ सहक सहर्हि न रियि याग-वर्जक क
न श्री ह नृ उ व न न प्रसाद २ प्रसाद जी र्ज न श्री ह नृ

२ अवनिनिदिगान्

हनुव विनामया सनक वृत्ता ॥ ॐ ॥ १ नागका माउच
अर्वनि निहिता ज्ञान नील समद हा श क क य पी नु य न रि
ख म व द र्नी ॥ ५ ॥ क ना ह ह ना ह ह २ ह ह ह ह ह ह ह जा
क अ च ल क्षा रु या या ॥ ॥ नि वि धि क घ न इ ति बं क रु ह
हा २ पा गे ख र्क्ष क्षी जी रु व न ना थ ॥ ॥ ह नी ह व पुं ऋ ०
द च उ मा ना २ मा न वि घ्न इ ति स फू र य ह व ना ॥ ॥ वि वि

20

१ अवनितो हि नवान

धिरुजलमोनालैककदहा२ऊगकवांशुगवव.रुलदा
यकं॥ ॐ ॥ १बागकासांउ॥ अवनिनीहिरुवासजा
नू.खमैकिजनमावसंप्रासा२बागदखसाह.वंधिउप
सा.शिशुवननाया.अवनविना॥ ॐ ॥ लमामिप्रीन
धुमहावाखना.ऊगमुय.रयऊदिगा२द्विखनाथवि
श्वयापिक.विर्वदिकर्म.महाकादनाया॥ ॐ ॥ अतिरि

खनाग. उर्ध्वप्रचन्दा. दृष्टाक. नालविन्दुमिकिन्नता. २
 पीण्डिक. अर्ध. ना. क. क. वनयना. वेली. मंगलासा. नाख. ह.
 ह. वना. ॥ माधव. माया. पूर्व. द. न. व. म. ना. ना. ड. पी. सा. वा.
 दि. पा. दे. व. र. न. म. २. स. म. न. स. मा. या. ना. ग. वि. मा. हा. ह. ना. ना.
 या. स. मा. हि. क. ह. हा. ॥ न. लो. र. न. म. प. क. लो. र. मो. वि.
 क. यु. व. ना. पू. न. न. न. म. न. का. ना. २. स. न. न. न. ना. ग. दि. व. दि.

३७

ग. पा. सा. ना. य. सो. न. स्व. ल. अ. व. न. वि. नी. ॥ २. ना. ग. व. स. न.
 अ. न. सि. क. स. म. इ. नि. द. ह. ह. प्र. ल. स्व. वा. २. वि. वि. वि. धि. न. ल. म.
 नि. म. क. ट. वि. ह. वि. ना. ॥ ५. ना. च. यी. न. श्री. अ. व. ल. वी. ना. २.
 नि. ना. च. उ. आ. न. द. वि. ना. स. यी. अ. व. ना. ॥ ॥ ध्या. म. उ. ह. व.
 वि. इ. म. डा. दर्श. ना. २. प्र. क. आ. बी. र्ज. न. अ. व. य. म. हा. स. र्ज.
 ॥ वि. ना. ग. व. न. यु. नि. क. व. र. यी. क. ना. २. क. स. य. नि. ह. क. घ.

३६

२ अ. ग. सि. क. ॥

२३ श्री वाकुली

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मा वन नद दयान- निव विष्णु हन ॥
य विमल शिखर गनक- गगन विवासायी अरुवा ॥ ॐ ३ ॥
२ वाग पंथ म ॥ कुर्यं वा द्युलि- हनु उद्यल शि- सयं नर
वासव- उगक उधारी ॥ ॐ ॥ महेश्वर गवता पाउ- स म
प्रमहिम दुल- ना उयुव वृनं मूनं का ना- हा उरु मल
आरुल न विरुषि मखेल धी- उ बाला २ धिनि धीनी धि

३६

२३ श्री २ कुर्यं

नयं श्री धिनि नयना ॥ कन्या विरुप- श्री वनू डन न
मिल मा ना २ कं शिष्य वांग वन मकट क ग ॥ ॥ मित्र म
सिंधु व क जे ल ह- वा २ कुरु वी क पुल ना म्बु व सख मा व
॥ ॥ रु नयि लु ले क व- वा वु नी हा मा २ श्री व क इ वी
साह- श्री ह व श पा या ॥ ॐ ॥ नाग रु ल वी ॥ कुर्यं २ वा
द्युलि- सयं न सा मा ल- २ अ व य श ह स र्वा व नी ॥

३७

॥ ऊ॥ नूनं नूनं नूनं हा हं हं ॥ कालनाचयि-माननि
 नवानुनी ॥ ॥ किमपदेयानि बहहापूवर्क ॥ शिन्नऊ
 ननीहवी-वर्कयोगिनी ॥ ॥ ऊ॥ २ हं ॥ आरुनम
 साता २ कवठिकयावखवागधवी ॥ ॥ ऊ॥ २ नोडस
 मगभनसि २ २ गी व्यनोडननसिलमाला ॥ ॥ ऊ॥ २ न
 खह-ऊगकसमा २ प्रलमामि जूदयसंवाहुनि ॥ ॥ ॥ ॥

३५

॥ नागविलास ॥ उदिताकवयीया-पवननइता २ वनंसहस
 मककासवंकगा ॥ ॥ ऊ॥ ॥ शालइसुवरुवधिसंरुनीता २
 अखयनिलेऊनभाऊसवंकगा ॥ ॥ दिनकवमलुल
 मवगगा २ देवा २ शुवननसिलनमिता ॥ ॥ हं ॥ आ
 लिमीरुय-प्रगितिहका २ कवुना मृकवगस्यववंकगा
 ॥ ॥ गावदिपवननपनिशुवृगका २ वर्कवावाहिइऊ

४०

२ उदिता ॥

विष्णु भक्ति

२६४३०७८९०१

सिलनमिगा ॥ ॐ ॥ १ नागविगाह ॥ धिरु कृपक मूव
वकवर्धु २ नगनमकृटक मतिनिवाचना ॥ ॐ ॥ नमो
हवी वृधजकिनि विस्वजननि २ धोरुवन व्यापीक जी
मस्तानदायति ॥ ॥ इहिनकनवक विनासिनक द
म्वति २ वामक बाटक चतुलमाधमपिवयी ॥ ॥
कननिमधुलमाधम आदिया नगमन्य २ वलनापृव

२६४३०७८९०१

वलगीक कंप्रव्यसिगा ॥ ॥ श्रीविशाधनी देवी सनन
नमहि मा २ सकन अधिसिद्धि दहीम मा ॥ ॐ ॥
२ नाग जं धाल लवी ॥ ॥ धुवनक निग मूवति ॥ मूव
मन विनयवर्ति ॥ ॐ ॥ नाचयी नरु सत्व पत्रम्य स्वव
जवर्ति ॥ ॥ वस्ति सह सुक्ति नद ॥ ॥ धुय सह सुवर्ति
॥ ॥ वेह विहन नृप ववी क्षमि ॥ ॥ अनु नायन सत्ववर्ति ॥ ॐ ॥

२५

२० निनायन

२ वाग अंवाहेलवी ॥ निनायन-वउवंकविहावा २
कनइप्रतिष्ठ नयुलहाम ॥ ॐ ॥ हामहामकनयिया
हं हं नहिउमावा २ वागदखमाहवन्निवशुदिन ॥
॥ पुलाव ८ उपायाववजा २ ववीससिवापयी
आश्यावेयीया ॥ ॥ वामदहिनभुलवहिपाया २
कनयिवजानव आहगिदिता ॥ ॥ कर्तुवाल्लय

॥ ३

२० निनायन

अयनलहाम २ वायुसहावदियसंवाध ॥ ॐ ॥
२ वागपुंकरम ॥ कलिकवजानन-लविससिकुचिकुजा
वयीअंकालनादवृषी २ कइवृजागधिरुवनविना
: पयिसयीजीनससि-विन्दुवृष ॥ ॐ ॥ पत्रमाआन
मयुनिवृषधवि-काधधियओमशैवजा ॥ ॥ कवीस
कमवसंजागध-सहजाआनद-पवनकनगसविनग

॥ ३

ति २ प्रयमख. खठ रुज. जलमकटधनी. ककुसिगा
 ननदहिनवास ॥ ॥ ॐ नुमधुलपलिवर्ज पञ्चकल.
 कंकमवृत्तगन्तप्रकाविगा २ वर्जखजसवदहिनकन
 धनी. वीमध ॥ पत्रवापधनी ॥ ॥ वीचिप्रवलाहव
 न. विरुषिता. रुलायिभूत कसूयुतिधना २ सगरुव
 चनन. कमलप्रसाह. नमामिपमनिवापई ॥ ॐ ॥

४४

२ कोलायि ॥

१ जागभादि ॥ कवायीप्रथियावा नाममनिप्रकलका
 २ घनकपिथिहायी. वजयीकनूरुतक्रियायितलो मा
 ॥ क ॥ मलयजं कूटुवृवजयी. उंतिमागानहिवर्ज
 यी ॥ ॥ कहिरावृखाजनगध. मयभापिवयिनया
 यी २ हालकालेऊनपनयायी. इडवृगहिवाजिभू ॥
 ॥ ॥ चउसमककुलिसिहा. कसूवनाउनयायि २

४५

१८३३

मनयकृतिधनसालिजन-तहिंलाबुखाऊनयायी॥
 पुखनकृपकवर्ग-मुखाधनमूनयिरनिलीमुहजंग
 वद्यावयीया-तहिंऊसनापानयायी॥ ३०॥
 रजागमयावलि॥ सर्ववृष्टिविवृष्टम-मुना-विश्वमालयुह
 निश्चरुयागिनी-वज्रमणिऊ-मात्र-वार्धवाचनि॥ ३१॥
 नमामि वाचुलिसिधियागिनीगममणिगाश्चरुम

२ विषय ॥

[illegible]

सत्त्वल. विस्ववृषं २ पथिपडमसंजां गध. संरुवनिश्च ना
सह ऊ आ च नमय. स्तानवृषं ॥ ॥ वरुपय्यकगर
कंकमावृनरुननामसंगिकि अऊयध्वनं २ ऊगक ३४
खनामन. वाधिरुलदायक. आगगत्सस्वविकावनीना
॥ ॥ गुवृवाकदृष्ट विद्या. अई पवनक विद्या. म
निमकृष्ट वेदा नीउगादि विनीया २ च उवक्रपा द्रष्ट

२ वन्द्यमसान

जीनयवमस्वनी-सूर्यरुवनस्वनिवावाहरुवन॥ ॥
स्वप्नमायासहसरावपनीरावता-वृद्धधर्महृद्यसज
नागकिर्यं २ शुभ्रवज नसि र्यधवीया-गभवन्तिस्वव
वर्जजस्मजस्मसा नूवृद्धसजननी॥ ॐ ॥ वागहलवी
चन्द्रधमसान-सिलसहका-वासकिनाग-गर्ज
रमघा २ ग कल गमगन-अस्वकहका-घनीरम

५६

घा-रुक्कनाग॥ ॐ ॥ वृद्धजमजलजकसरुन
वंकिवायुनाकस-दिगीविदिगीवनिहवस्ति-ले २ अ
यसमसान-कुपीसंविर्लविलस्वल नावयिसह
जानत॥ ॥ क कनिधावा-वर्हिकमघा-काली
कवा-कठकाटकनाग २ कर्नकरेलवा-वदुक
मघा-सलसजनाग-चूटकहका॥ ॥ अदनहा

५८

٥٢

नयी कर्षणान्. माखरु सवना. कात्री नाशनी प. वा
 पयिवदना ॥ ॐ ॥ ॥ रत्नागङ्गा गङ्गा लवी ॥ धूम्रगङ्गा
 नि. चन्द्रकलम् ॥ शिखरपिंगलकगवयम् ॥ ॐ ॥
 ॥ रत्नागङ्गा लवी ॥ ॐ ॥ ॥ रत्नागङ्गा लवी ॥ ॐ ॥
 महावनी पूजा ॥ ॥ समशाला कुम्भ्या गवनिहवी
 ॥ वाहलि वीहल. चन्द्रखरगयम् ॥ ॥ गिरुयक

٤٥

ॐ नमो भगवते
विष्णवे

नंकच्छुगवलिगमगाः २ पृष्ठिंकं नंकैसमाकूलवय
न॥ ॥ नीडमहावनीपीरुवत्रगयन२ मयमांस
मत्स्यवृधिनः साहान॥ ॥ ॥ नागग्वदशी॥ वा म
खत्येनैधनः दहिनैकरिं २ पोयलनोपूलमधुनव
गिलमाला॥ ॥ ॥ दविनाचयिः पुकाजठिबर्जजया
गिनी२प्रितिनः उदवीः श्रीशुवनपयिम॥ ॥ कानम

वृत्तवर्धन

श्यद्विपि. पारंगतवंधिनं २ नागदक्ष माहकारि ननुद
 ॥ ॥ कृतममद्वी. श्रीरुवतदवि २ भूतं पादद्वि
 भुन्यन्तासां ॥ ॥ शुद्धिर्महालनाया. कवूनकगया
 २ माकृमागद्वि. भविरुद्वी ॥ ॥ नागमादि ॥ वा
 बाहिव्यस्त्रि. प्रदवमना. दिनकलमधुलमध्वस्त्रि
 मा २ नकधमादया. वापियाताद्वि. सकृत्कगदिगं

स्वना॥ क॥ प्रसमानि वासुलि॥ श्रीवज्रयागिनी॥ अ
 नुरुत्तवाधिप्रदायति॥ ॥ विरुत्तकमरव॥ श्रीनी
 लावता॥ लाहिरवर्षप्रदालिनाशप्रवृत्तव्यापिनि॥
 दाहिनकल्पादिधामी॥ मूर्ध्नि पूर्वाक कपालधामी॥ ॥ ५६४
 चक्रोर्ध्वलकालिधामी॥ हाथा लावकविरुधिमि २
 वजनं नो पूजदहिना कालि यमखना॥ नवसिलमा

नमो भगवते
 श्रीगणेशाय नमः

गविरुधिता॥ ॥ विरुत्तकमरव॥ पलमयमरव
 रुवयरुयतावनिदी नमो वीरसहजानन्दस्वपि
 निदवी॥ अधिसिद्धिचक्रप्रसादायनी॥ ॥ ५६५ ॥
 गगनगजावलि॥ हकालसंज्ञक॥ युक्ताद्वयद्विभुज
 उकास्पदित्तये॥ क॥ कलाहसंज्ञकनाह॥ ॥ चक्रि
 कृदुलकालिमासा॥ अचक्रकयमयं सारग॥ ॥

५६५

१०८
पञ्चमः

भरतल नोपल पायल २ घा घव गल्ल व्या घुव मम ॥
॥ रुदामक विल्ववर्क २ गुक मलु अइ चहुव
कुं ॥ सव्य कलवर्क वास घं ६२ लव कावी
अलिधपदे ॥ ॥ हं लुल घं ॥ इयं श्री दिरु रु सं
म्वन प्रलवन व्यापि गो २ अधिसिधिमहा म डा सिधि
॥ ॥ १०८ ॥ ॥ राग मा न जी ॥ अष्टनामी अष्टपानका ल

६६

२ अष्टयागिनिवचन ॥ ॥ ॥ सिलसिगिं इल कां डल
रुना २ दवि प्रसादन मा क मार्ग ॥ ॥ नद सत्व मूथि
लपानका न २ रुव वाक न आ गार गंध ॥ ॥ कलवर्ग
मा रु गत्व रु ल द २ क वृद्धि कृत्तिरु ना स रु ल द ॥
रुत्व सिलसि मिधि रु ल पु सा द २ रु म रु न्या वर्क
विना सिनि स ल न ॥ ॥ ॥ राग मा न कलि ॥ ॥

६७

शक्तिवत्तननि
शक्तिवत्तननि

कितवत्तनयति उव. नशी कां पा क ल. निर्वसय
निर्मवमति ता २ न पाल म धु ल मा म्भ. गगि ह क की
ल ल. रुग क म धु ल मा म्भ मति ना ॥ ५ ॥ शिजा गति ग
रि शा न. अ व ता ल या ल द व प्र न मा नि वृ ग म न ली
क श्व ल द व २ सि धा या गिति. व न्धू द रु पा नि क म या
उ व प नि वृ ग म ति न ल नु द व ॥ ॥ ना धि क म ल व

६८

वि वृ प्र का सि रु. वा धि या न वा म क म व ध ल हा ॥ ५ ॥ २ ॥
मृ त्म म न रु. वा ग क रु. दा नि ड इः ख रु य ह ले ना ॥ ॥
इ ह रु ग वा कि. का या रु ग ति. न मा मि श्री वृ ग म व ला
क श्व न द व २ न मा मि २ श्री लि न न नु द व. स्व र्ग म
ध. पा ना न द व ॥ ॥ द ग रु मि दा धि ग रु ल रु न व
श्री या. रु ग रु मा थ अ रु य दा ना २ श्री मृ मि ना रु व सि

॥

५८

१ मधुलिपुः॥

यंगमधुलिया-शीलाकस्वलसलनागनिर्य॥ २॥
स्वागकाउसिकावसक॥ मधुनीपृथीपृलाइयनिश
बाला २मकलद्वगन-वदिरुचनन॥ ३॥ मधु
आदिवृचपीमंशकमाला २त्वमृविबंधामिपमन
स्यस्वला॥ ४॥ कृममृचिमासुनचिबृषमा २ शुभ
गमिचकचूनविहारा॥ ५॥ विखयविषमवृदपा

७०

१ मधुलिपुः॥

नंगमनस्य २विस्ववियापित-शीवंगुनुस्वयीरु॥ १॥
२॥ मरुगुनुपत्रमादिविंदमाभाध्व २ गओति
रुवगिरु-पुनओकालिमा॥ ३॥ वागमलाल ४॥
पुनवदननलमकट आनकैना २चउउउखज
पृष्ठकमनधनधालि॥ ५॥ नमानि मरुशीपन
नमअना २मयलआसापविपूजित उधानिमा

७१

२ सुभंदका ३

॥ दहिने श्रीगतपति. वामे श्रीमार्हा दान २
सगतमधुलमाय. प्रकृतिनामिका ॥ ॥ गृहि स
रात्रवाया. विश्वयापिका २ अष्टरयवद्वयाधि
विकरुलना ॥ ॥ वरुधनप्रसादि नदासरुनशिया
२ शुचयलनमावृत्तिधिवनप्रसादा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ वागकासा ॥ ॥ सुरगंधधु उपलि संलि न सं सं. वृ

६३

धंग्रीम जाकिर. शुचवर्ध २ श्रीवृद्धजकगमिमधुन
रु. नंकावसंजार. प्रनमासिसा नं ॥ ॥ अष्टरयवद्वयाधि
पलि संलि न सं सं. नलांक मू जाकिर. पीरवर्ध २ श्री
नल शक न वि सं लुल रु. नं काल सं जार. प्रनमासि
गमिका ॥ ॥ मयूत्रमू जापवि सं लि न सं सं. पत्राक मू जा
कि न व क वर्ध २ श्रीपद्मदाक न वि सं लुल रु. यंका न

६३

10
 11
 12
 13
 14
 15
 16
 17
 18
 19
 20
 21
 22
 23
 24
 25
 26
 27
 28
 29
 30
 31
 32
 33
 34
 35
 36
 37
 38
 39
 40
 41
 42
 43
 44
 45
 46
 47
 48
 49
 50
 51
 52
 53
 54
 55
 56
 57
 58
 59
 60
 61
 62
 63
 64
 65
 66
 67
 68
 69
 70
 71
 72
 73
 74
 75
 76
 77
 78
 79
 80
 81
 82
 83
 84
 85
 86
 87
 88
 89
 90
 91
 92
 93
 94
 95
 96
 97
 98
 99
 100
 101
 102
 103
 104
 105
 106
 107
 108
 109
 110
 111
 112
 113
 114
 115
 116
 117
 118
 119
 120
 121
 122
 123
 124
 125
 126
 127
 128
 129
 130
 131
 132
 133
 134
 135
 136
 137
 138
 139
 140
 141
 142
 143
 144
 145
 146
 147
 148
 149
 150
 151
 152
 153
 154
 155
 156
 157
 158
 159
 160
 161
 162
 163
 164
 165
 166
 167
 168
 169
 170
 171
 172
 173
 174
 175
 176
 177
 178
 179
 180
 181
 182
 183
 184
 185
 186
 187
 188
 189
 190
 191
 192
 193
 194
 195
 196
 197
 198
 199
 200
 201
 202
 203
 204
 205
 206
 207
 208
 209
 210
 211
 212
 213
 214
 215
 216
 217
 218
 219
 220
 221
 222
 223
 224
 225
 226
 227
 228
 229
 230
 231
 232
 233
 234
 235
 236
 237
 238
 239
 240
 241
 242
 243
 244
 245
 246
 247
 248
 249
 250
 251
 252
 253
 254
 255
 256
 257
 258
 259
 260
 261
 262
 263
 264
 265
 266
 267
 268
 269
 270
 271
 272
 273
 274
 275
 276
 277
 278
 279
 280
 281
 282
 283
 284
 285
 286
 287
 288
 289
 290
 291
 292
 293
 294
 295
 296
 297
 298
 299
 300
 301
 302
 303
 304
 305
 306
 307
 308
 309
 310
 311
 312
 313
 314
 315
 316
 317
 318
 319
 320
 321
 322
 323
 324
 325
 326
 327
 328
 329
 330
 331
 332
 333
 334
 335
 336
 337
 338
 339
 340
 341
 342
 343
 344
 345
 346
 347
 348
 349
 350
 351
 352
 353
 354
 355
 356
 357
 358
 359
 360
 361
 362
 363
 364
 365
 366
 367
 368
 369
 370
 371
 372
 373
 374
 375
 376
 377
 378
 379
 380
 381
 382
 383
 384
 385
 386
 387
 388
 389
 390
 391
 392
 393
 394
 395
 396
 397
 398
 399
 400
 401
 402
 403
 404
 405
 406
 407
 408
 409
 410
 411
 412
 413
 414
 415
 416
 417
 418
 419
 420
 421
 422
 423
 424
 425
 426
 427
 428
 429
 430
 431
 432
 433
 434
 435
 436
 437
 438
 439
 440
 441
 442
 443
 444
 445
 446
 447
 448
 449
 450
 451
 452
 453
 454
 455
 456
 457
 458
 459
 460
 461
 462
 463
 464
 465
 466
 467
 468
 469
 470
 471
 472
 473
 474
 475
 476
 477
 478
 479
 480
 481
 482
 483
 484
 485
 486
 487
 488
 489
 490
 491
 492
 493
 494
 495
 496
 497
 498
 499
 500
 501
 502
 503
 504
 505
 506
 507
 508
 509
 510
 511
 512
 513
 514
 515
 516
 517
 518
 519
 520
 521
 522
 523
 524
 525
 526
 527
 528
 529
 530
 531
 532

[illegible]

ब्रह्म नदि गंविदि गंरु वन. ध्वंजिले मालव बुल न
 ग्ध २ गगल सखल गगल भूषं कौ मलं काला. गगल
 उम वृ ध्व वा दियाले ॥ क ॥ ह ह ह न मा मि प व ह
 किनि. प व ह गगल दि श्व न अ की नी. स ल न इ ग्ध श
 ग्ध मा ॥ ॥ पृष्ठ उरु ल प श्वि म द डि न व बु व न
 वि घ्न मा न वि घ्न रं दि यान ३ अ कि नि दी पि नि च उ

सिक बा ऊ न घाल व्यगा ल स ग्रा स व द न ॥ ॥
मिं घालि. व्यां घाली रु म्ब क र लं कि ति ख धा ग प ल धु
मं क स र मा र व र्ग अ कि नी घाल व्य गा व अ कि नि.
व न्द ल अ कि ति च तु ल द वि ॥ ॥ कि न ऊ ल नि द
वि अ कि ति रु रू पा य स व न. पं च मू दार ल न वि
धि गा र ख र्ग रु क क व ज धं र. ख धां क पा प्र ल म

५६

विरुखिगाः आलिकालिङ्गिआलिध वापवि. व्याघ्र
चर्मनिर्वागन कृष्णकनः ॥ नवसिलसा वा आल
स्वलीसंस्वना. दिव्यचक्राणि निकवृत्तदृष्ट्या २ रुक्मक
न्ममावर्तुशपायनसलना. ममादिपत्रमोदिवर्जगीता
॥ २०५ ॥ एवमश्वदश्या ॥ देवीनिसलव नविनासयिक
यिस्य ३ उथरुमादिसलनाया ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

कगकनिचीसियाअ॥ अमियशतिलेजनदस॥ सह
 कथुद्वियाजिनदबपयिस्प॥ उचउआगिनीउ
 लमना२वर्जवाबाहिआलिगैधकाल॥ उथरना
 दकबूनकवावि२ऊयैऊयैआलिगैधलिलवर्धुवाल
 ॥ ॐ ॥

सर्वदिशयासिन्नक

॥ आवा ॥ सर्वनाथागतामार्गः सर्वनाथागताव
यः सर्वधर्मागमस्तान्माह गमयन्तु मूलमूलम् ॥ १ ॥
॥ इति ॥ सर्ववक्त्रसंघर्षः सर्ववक्त्रवर्जितः समन्त
रुद्रकाग्रः ॥ सर्वमूलमूलमूलम् ॥ २ ॥ यत्किञ्चिद् ॥
॥ मूलधर्माग्रमूलः स्तनवर्षाविश्वधर्माः समन्तरुद्र
वावाग्रः ॥ सर्वमूलमूलम् ॥ ३ ॥ उरु ॥ सर्वमूल

८८

सर्व

महाविरुः शुद्धप्रहरी निर्मलः समन्तरुद्रविश्वः
शाखेमूलमूलमूलम् ॥ ४ ॥ १ सर्ववक्त्रसंघर्षः सर्ववक्त्रवर्जितः
वक्त्रवर्णः सर्ववक्त्रवर्णः पितृसर्वविकल्पमूलकः
आकिर्निहन्कादिनाः ऊहवर्कः पवित्ररुद्रः जिनः गुणः
नाः धामाकः रुद्रः यस्याः रुद्रकपा इव रुद्रस्य सनमाः नि
रूपसंमहवर्कः ॥ १ ॥ नित्यनाकमपुथरुः सिल्लि

८९

प्रभादि कया सिद्ध

कच इतः शिवकैलं इमा ल्यद मोलि. वज्रालि व्यशपाति
पनिघकसिखलं. श्रममालि दुमोलि. वावा सापृष्टिकं
१७. घननिवकलिका. नागचमोकलीय. पायाक श्रीमन्व
वारुणारुवनविशुयि. अकिनिह नृकादिना. ऊहच
कंपनिवरुग. जिन. गुन. स्तन. इयाभाऊ हयन. यस्या
कस्य. कया तुलहस्यमन शानित्यप्रसं सह नृवह १ ॥

२०

एता रुतन गामिन

चदालि. कचलि नयानि दपदा इलालिका विसवा. विस्व
वाधिमहासखदिनचयं. लितं स वा. धोधाया. अस्वाजाय
नापिनिहंति पनं. प्राफायविधफलया. लागमदागचिरुध
य. सहजायतन्याय. वन्यामह १ ॥

२५

ॐ

विष्णुसूक्तम्

१ नागं गुंभीरमावधी ॥ विरुज्जु कसूखत्रकवर्धनी
नया २ मकुटकसद्विगुम्वना ॥ ॐ ॥ ननाहं हं १ नना
हं हं २ ननाहं हं हं ॥ ॥ वामकनाटकद्विहिनक
नटि २ हाडारननसमाहिता ॥ ॥ सूर्यमधुल
माभमावद्वमवृत्ति २ वर्जमंथिरुविरुखिता ॥ ॥
सगुनवृत्तनसिन्धुगन्धना २ वर्जवानाहि दुःखाय सवना ॥

७२

नमामि २ शानति

१ नागलेखनी ॥ नमामि २ श्रीहानतिमहाजकुनिद्वी २
पंकपुष्पनिधाननिद्वी ॥ ॐ ॥ नमामि २ पद्मनि-
मामकिद्वी ॥ जगन्मंथालपनिपानिमा २ जन्म २ अधि-
मिधि ॥ माकुमुकिपुमादा ॥ ननाहं हं ननाहं हं ॥ ॥
नमामि २ श्रीहूर्यधनद्वी ॥ जगत्पत्मा २ द्वादशवर्ष
पुष्पणी विधानीमा ॥ ॥ नमामि २ श्रीवृजानामहि ॥

७३

नमो भगवते वासुदेवाय

निद्वी २ धर्मक्षुपनिवा नीरुत्तुययान्ति ॥ १ ॥
नमामि २ श्रीमश्वरुर्गनीरुत्तुययान्ति २ प्रनमामि श्रीप
इमनिद्वी. नद्विसिद्धिद्विभवा २ ॥ गगनलवी ॥
नमामि २ श्रीमश्वरुर्गनीरुत्तुययान्ति २ प्रनमामि श्रीप
वा २ यकवृद्धात्मकयवकुपप्रनित्ययनमंश्वज
॥ ५ ॥ गनोहं गनोहं गनोहं गनोहं सकनविशधिपक

नृनामयमृनृगिरुनप्रधानसुहिता॥ नमामा
मि२वागीश्वरेणवाणवनहिमवरेतना२गंध
त्रिंगतमद्वयउक्तनवजघरुषकुमार॥ ॥
नमामि२मंरुकुमाना०मृदुखवरे०उखितलभरुना२
नातानलउखितदहाकुरुविधियु०म०म०मुधनान०
॥ नमामि२शुभुवनलन०सर्वमाकार्यका